आचार्य महाप्रज्ञ ने बच्चों को बताए कलात्मक जीवन के गूर

लाडनूं, 26 मई, 2009।

जैन विश्व भारती के अहिंसा भवन में युगप्रधान आचार्य महाप्रज्ञ ने जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा द्वारा आयोजित दस दिवसीय राष्ट्रीय संस्कार निर्माण शिविर के संभागी बालक–बालिकाओं को कलात्मक जीवन जीने के गूर सिखाए। उन्होंने प्रश्नात्मक शैली में कहा कि शिविर में आने के बाद अपने आप में क्या बदलाव महसूस कर रहे हैं? इस पर शिविरार्थियों के द्वारा विभिन्न उत्तर मिलने पर आचार्य महाप्रज्ञ ने कहा कि शिविर में जीवन को कलात्मक बनाना आवश्यक है। उन्होंने कलात्मक जीवन जीने के सूत्रों की व्याख्या करते हुए कहा कि विनम्रता, सहनशीलता और क्रोध का उपशम करना सीख जाते हैं जो जीवन कलात्मक बन सकता है। उन्होंने कहा कि ये कलात्मक तत्त्व है, इनका विकास होना आवश्यक है। इमोशनल डवलपमेंट के बिना जीवन में आने वाली समस्याओं का सामना नहीं कर सकते।

आचार्य महाप्रज्ञ ने कहा कि भावी पीढी के निर्माण पर ध्यान देना जरूरी है। इन नौनिहालों पर समाज एवं राष्ट्र का भविष्य टिका है। आचार्य महाप्रज्ञ का सान्निध्य प्राप्त करने के लिए बच्चों का उत्साह देखते ही बन रहा था। आचार्य महाप्रज्ञ ने बालकों को शिविर में मिल रहे संस्कारों को संजोकर रखने की प्रेरणा दी।

इस मौके पर युवाचार्य महाश्रमण ने शिविरार्थियों के कंठस्थ ज्ञान की जानकारी ली। इससे पूर्व प्रतिक्षा सालेचा एण्ड पार्टी ने नैतिकता की सुरसरिता में गीत को नई लय में प्रस्तुत किया। बालकों की प्रस्तुति को ओम अर्हम् ध्वनि से सरहाया गया। संचालन मुनि जीतेन्द्रकुमार ने किया।

बालकों ने निहारा तुलसी कला प्रेक्षा को

राष्ट्रीय संस्कार निर्माण शिविर एवं तेरापंथ किशोर मण्डल के राष्ट्रीय अधिवेशन में देश के कोने–कोने से भाग लेने पहुंचे बालकों ने जैन विश्व भारती स्थित कला का बेजोड़ नमूना तुलसी कला प्रेक्षा को निहारा। कला दीर्घा को देख किशोर कह उठे अद्भूत! तेरापंथ के साधु–साध्वियों के हाथों से निर्मित काष्ठ कला एवं चित्रकला के अद्भूत नमूनों को देख सब आश्चर्य चकित हो गये। सबका यही कहना था कि इतनी सुन्दर कलाएं यहां सुरक्षित है, यह गौरव की बात है मोती से अक्षरों में लिखे गये तेरापंथ के दसों आचार्यों के हस्तलेख काबिले तारीफ। बालकों ने इस कलाप्रेक्षा को एवं जैन विश्व भारती को पर्यटन स्थल के रूप में घोषित करने के लिए सरकार का ध्यान आकृष्ट करना जरूरी बताया।

धर्म की साधना से होती है आत्मा निर्मल – युवाचार्य महाश्रमण

युवाचार्य महाश्रमण ने प्रवचन के दौरान कहा कि धर्म की साधना करने से आत्मा निर्मल होती है। उन्होंने कहा कि आयुष्य छोटा या लम्बा मिलना कर्मों का फल है। हमें यह चिंतन रखना चाहिए कि जितना भी आयुष्य मिला है उसका उपयोग पुनीत कर्मो में करूंगा। उन्होंने कहा कि अच्छा जीवन जीने का संकल्प होना चाहिए। जीवन में सदाचार, सदसंस्कारों रहने चाहिए।

युवाचार्य महाश्रमण ने मनुष्य जन्म एवं आयुष्य कर्म को विशद व्याख्या प्रस्तुत की।